International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-06-2026, Accepted: 16-07-2026, Published: 31-07-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 18-19

हिमाचल प्रदेश की टाकरी (टांकरी) लिपिः एक ऐतिहासिक एवं भाषाई विश्लेषण

संगीता मीणा[1], डॉ बिजय कुमार प्रधान[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय, निवाई, टोंक, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय, निवाई, टोंक, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.3.8056

सारांश
संक्षेपः प्रस्तुत शोध पत्र में हिमाचल प्रदेश की भाषाई विविधता, पहाड़ी भाषा समूह की उत्पत्ति, विभिन्न भौगोलिक अंचलों में प्रचलित उपभाषाओं (बोलियों) तथा ऐतिहासिक लिपियों के क्रमिक विकास का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण देखा जाये तो इस देवभूमि में प्रचुर मात्र में पांडुलिपियाँ, ताम्रपत्र और शिलालेख उपलब्ध हैं, जो ब्राह्मी, खरोष्ठी, कुटिल, शारदा और विशेष रूप से 'टाकरी' (नागरी और महाजनी के समानांतर) लिपि के समृद्ध इतिहास को प्रमाणित करते हैं। इस शोध में स्कन्दपुराण के ऐतिहासिक वर्गीकरण (जालन्धर खण्ड) से लेकर आधुनिक भाषाविदों (जैसे डॉ. ग्रियर्सन, मौलूराम ठाकुर, डॉ. यशवंत सिंह परमार और डॉ. ओम प्रकाश शर्मा) के वर्गीकरणों की समीक्षा की गई है। निष्कर्षतः यह पत्र स्पष्ट करता है कि पहाड़ी भाषा का मूलाधार संस्कृत और प्राकृत है तथा पश्चिमी पहाड़ी भाषाई विन्यास के अंतर्गत टाकरी लिपि का प्रचलन 16वीं से 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक अत्यंत व्यापक था।

मूल शब्दः पांडुलिपियाँ, ताम्रपत्र शिलालेख, जालन्धर खण्ड, पुरालेखीय, रेखड़ी विद्या

प्रस्तावना एवं भाषाई परिभाषा

''पहाड़ी'' शब्द केवल एक भौगोलिक सूचक नहीं है, अपितु यह एक संपूर्ण सांस्कृतिक और भाषाई अस्मिता को समाहित करता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से, पहाड़ी का तात्पर्य उन जनसमूहों से है जो पर्वतीय अंचलों में निवास करते हैं, जिनकी अपनी एक अत्यंत समृद्ध संस्कृति, विशिष्ट सभ्यता, रहन–सहन, वेशभूषा, खान–पान होता है और जो अपनी दैनिक अभिव्यक्ति के लिए अपनी स्थानीय मातृभाषा का व्यवहार करते हैं।

भाषाविद् जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन के अनुसार, ''पहाड़ी'' नाम किसी एक विशिष्ट भाषा का सूचक न होकर एक वृहद 'भाषा समूह' को इंगित करता है। भौगोलिक दृष्टि से इस भाषाई समूह का विस्तार पंजाब के ऊपरी भाग (भद्रवाह) से लेकर पूर्व में नेपाल की सीमाओं और हिमालय की संपूर्ण तराई तक विस्तृत है।

ऐतिहासिक जनगणनात्मक साक्ष्यों के अनुसार, सन् १८८१ (1881) की जनगणना में तत्कालीन जालन्धर खण्ड (वर्तमान हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र) के निवासियों ने अपनी मातृभाषा को आधिकारिक रूप से ''पहाड़ी'' दर्ज करवाया था, जिसका पुष्ट प्रमाण 'गजेटियर भाग–१ (1983–84)' की आधिकारिक सारणी में प्राप्त होता है।

हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान के केंद्र में स्थित टाकरी (टांकरी) लिपि न केवल एक लेखन पद्धति है, बल्कि यह पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के सामाजिक–राजनीतिक इतिहास और बौद्धिक परंपरा का एक जीवंत दस्तावेज भी रही है। सदियों तक यह लिपि उत्तर–पश्चिमी भारत की पहाड़ी रियासतों की आधिकारिक लिपि के रूप में प्रतिष्ठित रही, जिसने राजसी फरमानों से लेकर व्यापारियों के बही–खातों और तांत्रिक पांडुलिपियों तक को अपनी गोद में समेटे रखा था।

पहाड़ी भाषा की उत्पत्ति एवं वर्गीकरण

भाषाई विकास क्रम के अनुसार पहाड़ी भाषा की उत्पत्ति 'खश', 'दरद', 'पैशाची' तथा 'शौरसेनी प्राकृत' से मानी जाती है। टाकरी लिपि का उद्भव और विकास प्राचीनतम लिपि प्रणालियों में से एक, ब्राह्मी से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक और पुरालेखीय साक्ष्यों के अनुसार, टाकरी सीधे तौर पर 'शारदा' लिपि की वंशज है, जो मध्यकालीन कश्मीर और उसके पड़ोसी क्षेत्रों की प्रमुख लिपि थी। भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर पहाड़ी भाषा को 'आर्य भाषा परिवार' के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। डॉ. ग्रियर्सन के भाषाई और भौगोलिक सिद्धांतों के अनुसार, पहाड़ी भाषा को मुख्य रूप से तीन उप–वर्गों में विभाजित किया गया हैः

1. पूर्वी पहाड़ीः जिसका विस्तार मुख्य रूप से नेपाल के क्षेत्रों में है।
2. मध्य पहाड़ीः इसके अंतर्गत कुमाऊँनी और गढ़वाली भाषाएँ आती हैं।
3. पश्चिमी पहाड़ीः इसके अंतर्गत हिमाचल प्रदेश की अधिकांश बोलियाँ और उपभाषाएँ समाहित हैं।

विशिष्ट शोधकर्ता कुमार सिंह सिसोदिया के अनुसार, हिमाचल की इन बोलियों और उपभाषाओं को मुख्य रूप से चार क्षेत्रीय खंडों में विभक्त किया गया हैः
(क) मध्य हिमाचली,
(ख) उत्तरी क्षेत्र की उपभाषाएँ,
(ग) पश्चिमी क्षेत्रीय उपभाषाएँ, और
(घ) दक्षिणी क्षेत्र की उपभाषाएँ।

वहीं प्रसिद्ध विद्वान पद्मचन्द्र कश्यप ने अपनी कृति 'सरस्वती सिन्धु सभ्यता' में प्रतिपादित किया है कि हिमाचल की पहाड़ी भाषा का वास्तविक भाषाई स्वरूप समग्र रूप से 'पश्चिमी पहाड़ी' में ही समाहित है।

हिमाचल प्रदेश का भाषाई परिवेश एवं बोलियाँ

हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक विषमता ने यहाँ अद्भुत भाषाई विविधता को जन्म दिया है। डॉ. यशवंत सिंह परमार ने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक ''हिमाचल प्रदेशः क्षेत्र व भाषा'' में शोधपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली उपभाषाओं और बोलियों की कुल संख्या ३० (30) है।

विद्वान मौलूराम ठाकुर ने अपनी कृति ''पहाड़ी व्याकरण'' में यहाँ की प्रमुख बोलियों का विस्तार से विवेचन किया है, जिनमें जौनसारी, सिरमौरी, बघाटी, क्यौंथली, कुल्लुई, मण्डयाली, चम्बयाली, कांगड़ी, कहलूरी (बिलासपुर) तथा भद्रवाही आदि अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान भाषाई परिवेश में प्रमुख ११ बोलियों को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है:

क्र.सं.	उपभाषा/ बोली का नाम	मुख्य प्रभाव एवं भौगोलिक क्षेत्र
1.	जौनसारी	उत्तराखंड सीमा से सटे क्षेत्र
2.	सिरमौरी	सिरमौर जनपद
3.	क्यौंथली	शिमला एवं आसपास के क्षेत्र
4.	बघाटी	सोलन एवं समीपवर्ती क्षेत्र
5.	कुल्लुई	कुल्लू घाटी
6.	मण्डयाली	मण्डी जनपद
7.	चम्बयाली	चम्बा क्षेत्र (टाकरी लिपि का मुख्य केंद्र)
8.	लाहुली	लाहौल–स्पीति का जनजातीय क्षेत्र
9.	कनावरी	किन्नौर क्षेत्र
10.	कहलूरी	बिलासपुर और समीपवर्ती क्षेत्र
11.	कांगड़ी	कांगड़ा, हमीरपुर और ऊना

भौगोलिक और विषयवस्तु की भिन्नताओं के आधार पर, टाकरी लिपि के प्रयोग के संदर्भ में छह प्रमुख बोलियाँ विशेष रूप से अग्रगण्य हैं: चम्बयाली, कांगड़ी, मण्डयाली, कुल्लुई, सिरमौरी तथा क्यौंथली।

रेखड़ी विद्या एवं लिपियों का क्रमिक विकास

हिमाचल में लेखन कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, जिसे स्थानीय स्तर पर 'रेखड़ी विद्या' के नाम से भी जाना जाता रहा है। इस क्षेत्र में लिपियों का विकास क्रमिक और बहुस्तरीय रहा है: कुटिल लिपि (६टीं से ९वीं शताब्दी): ईसा की छठी से नवीं शताब्दी के मध्य अक्षरों की बनावट में वक्रता आने के कारण 'कुटिल लिपि' प्रचलन में आई। इस लिपि के अक्षरों का आकार और बनावट कर्सिव या घसीटदार शैली में थी। प्रसिद्ध पुरालेखविद् 'जूलर' ने इसे 'न्यूनाकोणीय लिपि' (Apex-headed script) नाम दिया था, जबकि प्रसिद्ध इतिहासकार अलबरूनी ने इस कालखण्ड की लिपियों को 'सिद्धमातृका' की संज्ञा दी थी। शारदा लिपि: कुटिल लिपि के ही उत्तरकालीन विकास से शारदा लिपि का उत्थान हुआ, जो कश्मीर और हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों में ज्ञान–विज्ञान की मुख्य भाषा बनी। उत्तर–शारदा एवं अन्य क्षेत्रीय लिपियाँ: कुटिल व शारदा लिपि के पश्चात जिन क्षेत्रीय लिपियों का उद्भव हुआ, उनमें नागरी, टाकरी, पाबुची, भूटाक्षरी, पण्डवाणी, चन्दवाणी और लच्चा लिपि प्रमुख हैं।

टाकरी (टांकरी) लिपि: ऐतिहासिक साक्ष्य एवं महत्त्व

पहाड़ी भाषा का मूलाधार मूलतः संस्कृत और प्राकृत भाषाएँ हैं। वर्तमान हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक संरचना ऐतिहासिक रूप से स्कन्दपुराण के अनुसार पाँच खण्डों (नेपाल, कूर्माञ्चल, केदार, जालन्धर और कश्मीर खण्ड) में से 'जालन्धर खण्ड' के अंतर्गत आती है। इसी जालन्धर खण्ड से आधुनिक हिमाचल के स्वरूप का क्रमिक भाषाई व सांस्कृतिक विकास हुआ है, जिसका प्रमाण डॉ. ओम प्रकाश शर्मा की पुस्तक ''हिमाचली पहाड़ी भाषा लिपियाँ व लोक साहित्य'' (आकाश पब्लिशिंग हाउस, २०२२) में मिलता है।

हिमाचल देवभूमि में आज भी असंख्य पांडुलिपियाँ, ताम्रपत्र, शिलालेख, मंदिरों व मूर्तियों की वेदिकाएँ तथा जल–स्रोतों के शिलाफलक (पनघट आदि) विद्यमान हैं, जो प्राचीन ब्राह्मी, खरोष्ठी, कुटिल, गरी और टाकरी में निबद्ध हैं। वर्तमान प्रशासनिक विभाजन अनुसार हिमाचल का भू–भाग १२ जिलों (कांगड़ा, कुल्लू, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर, मण्डी, शिमला, सोलन, सिरमौर, लाहौल–स्पीति, किन्नौर और चम्बा) में विभक्त है। इनमें से मुख्यतः कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू, शिमला और सिरमौर के क्षेत्रों में टांकरी लिपि ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रही है। टांकरी लिपि को 'महाजनी लिपि' भी कहा जाता है क्योंकि इसका उपयोग व्यापारिक बही–खातों, दस्तावेजों, राजाओं की संधियों, अष्टाम–पत्रों (स्टाम्प पेपर), सनदों और राजकीय पत्राचारों में बहुतायत से होता था। उपलब्ध पुरालेखीय साक्ष्यों के आधार पर यह अकाट्य रूप से सिद्ध हो चुका है कि उत्तर भारत और विशेषकर हिमाचल के पर्वतीय अंचलों में सोलहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध (शुरुआती कालखण्ड) तक टांकरी लिपि जन–सामान्य और राजकाज की मुख्य लिपि थी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपरक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा और उसकी उपभाषाएँ भारतीय आर्य भाषा परिवार की समृद्ध धरोहर हैं। यद्यपि आधुनिक समय में देवनागरी लिपि का प्रयोग बढ़ा है, किंतु ऐतिहासिक काल में कुटिल और शारदा से विकसित हुई 'टांकरी लिपि' ने इस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक इतिहास को सहेजने में केंद्रीय भूमिका निभाई थी। वर्तमान में इन प्राचीन लिपियों और पांडुलिपियों का संरक्षण ऐतिहासिक एवं भाषाई शोध की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अलबरूनी. (अनु.). तारीख–अल–हिन्द (भारत का भाषाई विवरण). प्राचीन भारतीय लिपियों का उल्लेख।
2. ग्रियर्सन, जी. ए. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistic Survey of India). भाग IX, मध्य एवं पश्चिमी पहाड़ी भाषाओं का वर्गीकरण।
3. ठाकुर, मौलूराम. पहाड़ी व्याकरण. (विभिन्न पहाड़ी उपभाषाओं एवं बोलियों का विस्तृत भाषाई विश्लेषण)।
4. परमार, डॉ. यशवंत सिंह. हिमाचल प्रदेश: क्षेत्र व भाषा. (हिमाचल की ३० उपभाषाओं का प्रामाणिक विवरण)।
5. कश्यप, पद्मचन्द्र. सरस्वती सिन्धु सभ्यता. (हिमाचल के पश्चिमी पहाड़ी भाषाई विन्यास का ऐतिहासिक अध्ययन)।
6. ब्यूहलर, जॉर्ज. भारतीय पुरालेखशास्त्र (Indian Palaeography). कुटिल एवं न्यूनाकोणीय लिपि का विवरण।
7. शर्मा, डॉ. ओम प्रकाश. (२०२२). हिमाचली पहाड़ी भाषा लिपियाँ व लोक साहित्य. प्रथम संस्करण, आकाश पब्लिशिंग हाउस।
8. सिसोदिया, कुमार सिंह. हिमाचली बोलियों का क्षेत्रीय वर्गीकरण एवं भाषाई विन्यास।
9. सरकार, हिमाचल प्रदेश. गजेटियर भाग–१ (1983–84). सन् १८८१ की भाषाई जनगणना सारणी।